परिशिष्ट-३

कैलाश  देव  कृष्ण  शशिक विनायक

(पृष्ठ ३२० - ३८०)
श्री गणेशायमः अय जैस्किंद्र विनायक हियते

दोषा जनानि रिक्त जिन्हि जनक रिक्त रिक्ति म्यानी साथ 

बिधि करन सुम बरन क्या देव सरन गन नाथ।

कविता देव सहि सुलियक संपति संपति स्वाभू देपति जीरी 

देपति दीपति प्रत्य प्रतीति प्रतीति की प्रति स्त्री निजारी 

प्रति जब रस-रीति विचार विचार की बानी बुधा-सच्चारी 

बानी को सारे बखान्यो सिंगार सिंगार को सारे सिञ्चार किनारी।

दौ० राधा कृषि विनायक बुध मृति रति सिंगार 

बुधा सव उधारन सव सुखा की चारा।

सी मीकी नृप अंग को सम्युख सदा सहाय 

राधी जिन्हि कीरातला फलः ठाळाह उठला।

परिशि नृप मीकीतिन को कहीं अंग-विष्टार 

तव में बराना राखिता हरि मृति सिंगार।

जय रथ्यां छवि विचि विचि हरि हर गुन गान 

प्रस्तुति पावक लुढ़कै नृप प्रज्ञें 

चुङ्खान।

कुड़ियो काजु दुर राज को भूयो मुखु संसार 

कुड़ियो भरः चुङ्खान नृप हरसो भूमि को मार।

सी विस्तृते संभृतो संभृते नार नविन्द्र 

एक क्रम हिति पतितसो बन्नी पर अवनिद्र।

कविता लंबू दोलान्यो है जूरी कीप पर जाको जूरी कीप साथ जाकर राघवी सतीमान को 

पूरन पुरान कुबेर मेघ मन्दिर जीत जनेस से समान जिन्हि जान को 

संकलाप नोट दुर्ग सामग्र नोट जाके नोट कुर्न दिगन तुथोत के विसान को 

मारो भूषण इन्नी विचारयो मुख दुर्ग नित चारुयो चक चक्क चिहात चुङ्खान को।
सकल गणिते चिर थाप्यो राज भीमु जाम्बो
पुन्य का गीत बुधा सागर की कथी है
चारूयों सिंहु गूढ़, गूढ़ जलहयो सूक्ष
क्यूंकि मूल फललक सारा सुन प्रियी है
जाको करिवार परिवार लीले वैरिन को
दान करिवार दरवारकी वरीनी है
दिल्ली हुल्लान मध्य भूमि नृप मानु मारु
मालौ हुल्लान ज्वालान जान लीली है १३०

वृषभ पति सींची नवति: तिलिकुल मालु - मूप
पींकै वियन भोज के मध्य ब्रह्मविहुरु मूप । २१
बुधा सींची गुज़ - रस सींची: कुं कुं सिरलाज
स्नान हेत गजसिंह जू बांध सींचन राज । २२
बंधु सरोज सरोजकुल बोज उजास बरिंग
कीनी बांध प्राणागुप्त भाग के गज सिंह । २३
विचि वह पुक्क मौहों कुह वाघूयों विषुलविंद
केवलसिंह गजसिंह छो गरजे लेज़ जमी जमु । २५
राथी लिए गौतम नृपति पुक्क मौहों मारी
बांध मिंहु हुंच पांड मिंहु सुम सरोज विचारि । २५

वृषभी सींची नवति वटन रिंगो गढ़ सुम्बान
गौतम नृप गजसिंह को दीन्यों कन्यादान । २६
बंतर वंतिरंजि के गंगा बुधु सुम्बाप
को कुल दिन श्रेय अ रिंगोपुर नृप दीप । २७
कीली नृप गजसिंह के जन्माषुकुल क्यसिंह
महावाति गुज जारिवर रसुवु निरम्यसिंह । २८
मार्ग संग्रह लिख सुि हि राज़ियों कौटि
आपु गए गजसिंह जू निंज राजकांडी लौटि ।१६
बुझवाने बी-बी नृपि वस्त्र वंश संप्रति
हि लिखि जयसिंह जू मैलम गाए गोि ।२०
श्री जयसिंह कुमार के प्रमेय पालन देव
मैलम नेह बढ़ियाँगे मैलम कीनी देव ।२१
श्रीनृप पालन देव सुि जनम साधकि राव
राजकांड मैलमन अंग पूिड़ि निसानंि घाउ ।२२
पन्नह सै पहां १५५५ समे राणा इनि समाज
सेंफी साधकि देवशू शियो सकल गड़ि राज ।२३
प्रमेय दाहेंद देव सुि कृि मैलम महििप
श्रीनृप कृि मैलम सुि होमन ओं कुंडीि ।२४
होमन देव महििप सुि बी-बी जाजा देव
जाजा तै प्रमेय अो राजकी राजा देव ।२५
श्री प्रमेय भूि सुि पक्षकांड नर्मानां
जम्बूडीि महििप बैि बचे हांि की बांि ।२६
परि राम नृप के भए नृप रात-हरि हरि केस
हरि-केस्के बेलत चरि देव विशेस नाैि ।२७
कविता देव गजसिंह के सुिित जयसिंह जू के
प्रमेय पालन देव देव सुिित साधके
पालन महििप कुंडीिक साधकि देव
साधकि के कृि भूि मद माकि
कविता

जान देख ज्ञान ज्ञात बाहर
जान के प्रताप भो प्रताप के परसराम
तिनके कड़ें सिंह छोट पाल पांच ॥२५

नरदिता बडाश सिंह को जन्मनाम हरिकेशः
दान मेधय दिनेश तप गौरव जान गौनः ॥२६

राज्यो नरिंशां वारि कुछ कौ केस्य द्वे
थरे तथा केस दरयें दरयें से
सती संगमस महाराज हरिकेशः
वारि दिनेश से सुखाशेषः केश से
साक्ष वनेश से समागुँर गौनः से
सुपूर्त द्वे मेधे से सुनाती अमरेश से ॥३०

भाष्यो माषित कृ वामियो रालि कै न कछु
रालि कै बुनि अंत कहुँ विन्हित कै
मूप हरिकेश हरि के समीप जाह जाह कै
शोको पाक वासन कौ आसन विन्हित कै
पुन्य रसपीपि पर तोषि निर दोष
पद मोच है विधारी पलोक ने अंत कै
सीनी सुनाम दीनो कौ विन्हित
रूप कैंग चं माम घरि धाम भगवत कै।३१

महाराज हरि वैक्षेत्रस बुत मुनि विन्हित
विनि में सीनी मिहोक पति, तिरुमणम सुरंति।३२
मदन हरि भगिवंत नृप समाधिविभ वर नाम
लीनो सुभृज निदेव रूचि, हे सुपिठाम चिराम|_METADATA

चरित्रु लघु सौदर भुजद भये राख भगिवंत
वरिष्ठ निघि वारिज कांचि बपसिक वरि वरिष्ठ।|(metadata)

जाति तिरिंदि नौमति विषेन गजरा सी संयुत
गाजि नृप भगिवंत झुप गाजीपुर-झुपूहू|_135_

छंका को बनल डो मात जौलेम मानि।
छंका हो संकल व्य वंका बरिखाने को
नृप भजि ठाड़े होत गूढा गाठे बनि दूढ़-|_136_

फिरत मठ मृढ मृषी मानि धाने को
लेनी हरिकेश के नरेश भगिवंत हर।
बिलंद्र हराने केश राजा राख रामे के
वंद रहै बंदर वित्सावत विलानी जाह।
पाट लागे पटटन प्याने पैसाने के।|_136_

लेनी मालवेश हरिकेश के स्रूत।
द्वार बहू धू। वरूरुङ्करसंत हुल मानि के
देव नरेश विशि देखक हे बेद करै।|_137_
केवल असितित पिता दिलु नानि के
अर्थित विगंग अग्नि विरंचित।
शेल मरोशेन मगिवंत के मुखान के।|_137_

दोषार
विजय सिद्धि मगिवंत को लीनी कीता राम
सुभ संपति संति मुनति ज्ञ केहु समति। विश्राम|_138_

जोग जन्य जुग जुग किये श्री भगिवंत साहित
विशि हरि हर जुग रूप। विशि हर असतरे बाह।|_138_
रूप राख ज्यासिंह बल वीरति सिंह सुनाम
तीनों सुत मनवलं के बरे करे बल कबाम 140
जिनमें श्री ज्यासिंह जू मिये देर छाँ सेर रूप
मर्य संपति आगमन जिज्ञ नियो बुज्ज को देलु 141
कविता
वृक्ष गोहे दौलत हिलहिया को
रक्षाक शिरानत बुढ़ि चिंत चार्जिये
मानजन दस्याड नारी फौज को राख
घाल्य सुर चिर घाल रुन वान बल बालिखी ही
गरैव बैराज शिराज जिगराजन की
वच्ची रूप राख मंचल को मांखिले
जाको रूप राख राख कीरति दे निया
रैता राख मिरवलं को कहेया ठाल लालिखो 142
शान गरीबापन पुड़मिन पाक बासन को
हेज को हुतासन प्रभुतिय पन पति को
न्यालो गुढ़ नीतिको क्वारारो रान जीति को
उपारो दान शीति ग्रान न्यारापर वीन को
राख मिरवलिङ्ग सुहे को क्षिंसिंह राख
विनाम्र त्रिविन्म्र बहिनम्र नवीन को
संसाँन को छायु गुज्यतन को अनुरागु
भागु भेखन को बुहागु छुदनैन को 143

नूप कुमार ज्यासिंह ज्या सुदर नंद कुमार
देश भेखन कल्य तस विज संकल्प उदार 144
जानि जानि बुढ़िदानि का भजत जाकी जान
कुछ कुमारक कल्निनिदन पुरान सकल कलान 145
हैरास्त ज्यासिंह के श्री राधा चरि देव
श्री ज्यासिंह विनोद रूप वर्तन बहुयो कवि देव 146
रति सिंगार शुरु वा सदा सुंदर स्यामा स्याम
ही सदा मनिल की संतति को बुलायाम । १४७

सजाह है बहु उन्मादी १७६६६ संवत चित्र स्वर्ग
मारा तुम सबसे सप्तनी लीणि ज्ञानिसह सर्पस । १४८

वर्तिक क्यों सिंगार रस जुगह हर्ष विदरम
गुंग घेंग मूरे महान को तुम विनोद कही नाम । १४८

श्री वृजनायन कुमारिर ज्ञ ज्ञ श्री नन्द कुमार
श्री ज्ञानिसह कुमार को बुलात सहित परिबार । १५०

हरि श्री महाराज कुमार श्री ज्ञानिसह राह विनोद देववत कवि
विरचिते राजसंस वणन पूर्वक बुंदार रस वणन प्रस्तावना प्रथम
विनोद : १७१। कद शृंगार रस वणने ।

वंगति प्रेमाकुर प्रथम श्री सिंगार धिति भाव
तारि विभाव बढ़ावहीं प्रगटावे बलायाव । १५१

शातुक संवारीत श्री भीतार बाहर पूरिर
रति पूरा रस सिंगार को जोक जीवन मूरिर । १५२

कद सिद्धत्यादि निकूल

रति उपजति घरेन अवन प्रिय सिंगार धिति मूल
चंद्र चदनाक्रिव तत्त्व हे विभाव रितु पूरक । १५३

सरस देशस्त कल दृश मंद हास अनुभाव
बाहिर भीतार कु ल कम २२ कम संवारी भाव। १५५
क्य प्रमाण के स्वीकार

नरकंठा वृहद्मान रही भर सामुहिक वेन संजोग हुआ के
लोहन लोहन लागे अग्रम दूर दूर के रस-रूप हुआ के
मंद हंसी अरविंद ज्योति चित्र के गर दीर्घ हों दीर्घ हुआ के
क्रन की मूष में चर्चन मानो उठे जुनि संज्ञान चंद्र जुमे के
155

रूढ़िया यथा

विन एक के छोट गयो सोकु तर सीसी तथ्यो तन तालुकु दो
का नह चील श्वसूर ही कं दुःखे हुए धर थाकु दो
सौनिया दो देव हिमाल लग्नो जगण्यात में जावु दो
धाराओ नाव अच्छे चिलोर काय गयो चितवाकु
156

रूढ़िया पायक विहाव आलंबन यथा

का नायक पौल हंसयो दिनत्यो मिलमिले वृहद्मान कार खेलि कुटी
दुनायात गायत कोकिल मैर रंजात चंद्रकी चिकित्ती।
हरि रामकिश्ना खेलट देव तर्सा बुद्धी भरतान ती हिमाली
नर नागर मैंनि संह नह रंग उठी नाचि नौर नली घुटी।
157

उस्मान विहाव यथा

कार के अवम वर प्रभुर रहुया धुमाड़ि टासीयां बुंजान की निरवर्ती
देव से रंगी गुलाब मल्ली कमार अनार डार पाँढ़र महोंद्र न धर की
धारकुबुलकु नंदु मंदार उदार भू मांड महरें लिङ्ग धर की
वॉन के बौरहे है बौरहे बाढ़े डेव, एक बार उम्मी किलार लोलि लिकी
158

क्य रूढ़िया सिंगार के सुनामक अनुमान

नैन पौर नैसुक निस्त्रायो जन हरीत
tab हरीते न हुत विन्य हरीते सति हरीते
देषे चिनव देवन लिस विष्णु दीप्या का सो
विलास परलु राम, रामानि में रौरहे।
कैसे नहीं हरी भीड़ विषयक पाठ्यपत्र
रचना नहीं जिस विषय विषय को
बात हूँ क्योंकि तुम पर बृज पोर गोररि
दौरि दौरि बाँग वान धरुम की ठोसी । १५४

बात हूँ जात पर छोयन लेत छूँक नवय कर परंपराको
प्रेम की जद्दू धर्म हूँ स्थान क्षेत्र कुलनेम राष्ट्र हौँ लौँ लौँ हौँ
रण रसजन को
भौतिक विदुरावत दुरावत बने न दीया फारी हरीसी को स्वयं संस्थित को
राहूँ कलाभुल कलाज पहले भरी तो कह अज जो पार बत मेरा विषय को । १६०

अंगार प्रकाश संवारी । दौ।

संवारी संवारी काहि बात भावति सारीरि
प्रत्येकात्मक बिंदु तैत्तिरिक कहिए चीरि । १६१

सारिर वया

संवारी स्वयं, रामाचं बसू वेन्दु बल धुरंगति
विचरतास बाँझू घाँर दे साहूक रज लोग । ६२

गरे गुंज माल घरे मंगरी गुस्सा रास पुंज पर्याय स्वर्गोह दृष्टि हूँ रहे
बांध को अजेयी भिंगी पूजनित के होमन इभे पूजन भक्ति श्रवण होमन ही कहे रहे
उद्घटित न जीभ शुद्ध अवशेर नद उ वान रंग सो दे रहे
लाज की मूलति केवल नैनि नेति भोजन बतन कहे न सहिति जुल्ले रहे । ६३

बंटर संवारी

नैनि न भैरवि न दाति चुनति छैन
हरि में दूर गुन उद्घाटति बुनति भिंगी
शृंगती नवाव माल भिंगी उचाई करि
भिंगी रचाई चित रायन बुनति भिंगी
चुनी अच्छुनी करिकानन कथा देखि
बोध अध्ययन कर सुबलिनि नृति फिरैः
चौरी चौरी पौर हार पिलीका फिलार चोलि
गुप्त कथा की सु साहि है गुप्ति फिरैः ॥६४॥

दौहा
	×× सङ्खारितु की धरि
तारे मिछिल फिल उठत है मानसु कर नारिर ॥ ६५॥

विभावनि बड़ि अरुभावनि प्रगट हूँ सङ्खारितिनि प्रकाश राधिण्यूँ शंगार - यथा -

बूढ़ा नांद नहूँ कुछ तरही रघु फ्रें मी की वैलि नहीने
नैन भुई के बढ़े जित चैन भुईन रुकके न भुईने पट भोगीने
रंग रंग उरसौने उत्साह की मुखवाय ती की परबीने
फ्रें मी की संपति दंडि देव रघु फ्रें चालि फिले रूमीने ॥६६॥

दौहा
हरि विषिद मावनि राति बड़ि होई सङ्ख शंगार
सो राति पालि फ्रें रामन दरकन होत उदार ॥६७॥

रत्नेहुँ प्रिय रामन यथा -

रावरा सुंदर नंद कुमार सु बागुपु न्ति ही वेद ही में
चौरिनु चौरिनु गंगुल गोरिनु टोइत बाहु है चिंतनी में
याँ सुनि देव कहूँ गुनि के गुन भावी 'जलश ज्योतिषिनिमें
रूप हुम्बो उर बाह उरहो बुजुर्गौ विषयावन क्रमाविक्षि है में ॥६८॥

-प्रिय रामन है प्रिय चित्र दरीकः-

चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र रमो रमो रमो रमे सु प्रेम की धरी
बांक की भीनि मे रंग कथा कथा कथा देखनि ही में भी चित्र चारी
पीठि है दे पटरानि चित्रालि ती तौदिनि न-preन रत्नन की धरी
राज के राम हृत जिन्न नब मैं समाज न जानिनि भीरि ॥६८॥


स्वप्न : 

वालकें ध्वनि में सों नितंब सुह फूलन कही विषयान भक्ति भक्ति त्यां दर सम भाव में मिले अपने दिये प्रेम पत्र के वर्तन की तारे जो पैट भरी मुख गाड़े छूँ बाढ़े बुध के लिए में काट सकी डेव जी की रचिया हू गह न तिया की गह दक्षिया की फक्त की। 170

ढारे छुट की चुरी न तर डरा छिये नंद कवर में दुरी व्याेरों के निवासी विषयान ता गरी ते चंद्रा किंतू मिली नित्य वायर निहु है यही नाराज मृत्यु के विषय में 171 रुप रख सागर कृप संय वायर में, जात हवाँ हो दुम डांड़ी प्रेम पंधिया के चारों दिस रैने नित्य हुस्ल ने देखा हुन एक जिंदगी नितं न्या विषय में 172

जैसे वीज छ लां प्रकोप वजाह वीज व्याेरां न संजय संजय वाणि कान्छां का वाणि कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा वाणि कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां नवा बुनि के दुरी व्याेरा कान्छां 173

- हरि शंगार स्तंभ के शंगार-भेद वैहा-

रस शंगार के भेद हैं हं संजय विषय प्रथम एक विचि द्वाराँ व्यविचि बरन लोग 173

श्री पूर्व भुज दर भाग प्रातः विषय चारूं भेद विषय के बारंब रुप संजय 174

प्रथम होत संपत्ति के पूर्व भुज दर विषय तवा क्षा का विचि की ताता पासं संजय 174

फिरि विषय संजय ते मान प्रातः संजय 

या विचि मध्य विषय के होत शंगार न योग 176

क्रम पूर्वतुराग की प्रथम कसा विषयान
देश देश मुनि मुनि भूति राति रस सुर तलवार साणि
गुल्म प्रांत फल फूल कह प्राम होिि वर्धिलाष ।

गुल्माषिलाष

बैठी सिख मंदिर में सुंदरी स्वार की की मुंदि के क्षिकार केव इवि साँ बनावति है
पीत पट मुख लहुट वनाम घरि पेशु करि पक्क नति खिलि में लक्षि है
होििन निकेंक उर भंडूरि नैटि वे को मुनि पकरागित सतियाँ जाति है
वौँकित बचिि उक्किति चिलिरिि कहूँ मुम्मिलछायािि मुक्त सुि न सकाल है। ॥ ७५ ॥

प्राणाषिलाष

गोिि की बात कीि गुरु होि में िेूं चनि भोि संजीग बिखेिी
लीहिी बौद्धिी मन्दिर काली धारी छूँ बाली की बौढ़ कर बुििेिे
बांि रो उर िे उपरिे सुि साजिि कालिि पूरिि परि—िे
भूिि के भूिि छिेि नयं तैमिलिि निििि िेूँ कन्हििि देिे ॥ ७५ ॥

दिलीय क्षा िििा

लाजिनि तौिनि नाई इनाि आकाशिि को रुिि है िौि रही किन
िेि स्त्रीलिि नेि िििें निे उड़िे दहि है िौि दही किन
प्रीिमा। पीिि किलाि की पीिि करिि गरिि गचि है िौि गहौि किन
कथा इि मििि सि बौिि चखिि कहूँ कोऊँ करिि है िौि पहौि किन

आपमान दिलीय क्षा

सुंदर िुिि बुि भूि को बुिार सपिि, आणिि एउिि बौििि में िुिि रहियो है
िागि िििाँकि िरिि दागिि न एकि फल, कोिुि लगािें इवि होि हुििि रहियो है
िेि िशिविि लोि बौििि िंशिि फूििि, कुंिि कपड़ि मन हाँिि हुििि रहियो है
देिि न मूिि अकूलें उर-शूिि खिलि, लालिि लगाि चिलि लाल िुििि रहियो है। ॥५० ॥
गुन क्षण जयंति
बुध दास अशोक को मंदिर बाल के गुन गव गली
जौयन के कल मानी की कसानी छवि ब्रजिया उनपीली
कैव तुने सर सीस टुने कलाज तने कलाज हजीली
रूः है क्षण ऊजरी दो कुल की व्रज गृहरी गोकुल की गलीली।५१

उद्देश्य चंकिपदा

वैदिक देष करेंजिस सालित ज्वालाल्यांत्र तेष तेष बलिया में
पूर्ण उत्ते करिव सूल महासूल मृदु हाँ सुभा की वारिया में
कीरी वगारि है नीरी न ल्याव मुहारित न सातक की रातिया में
बाजिन बीट हसा सिन राहित क्यूकर के दे शतिया में।५२

पूलाप न्याय वर्य

कूलने कुरू की मिसिस सूक्षने कुरू की पियर
हारी हाँ कूरू की हरि जाकंगी ती जाकंगी
कुरू कुरू की पनी जुटार चरी रासरी
पराश पर वार परिव जाकंगी ती जाकंगी
गोलने निसीख घरे बंक दे जारू चोर कि
या दुर क्तूँ करिव जाकंगी ती जाकंगी
लौऱ्ये कवार कि बिन ब्रजिण कवार की
मिलोगी ती मिलोगी मरी जाकंगी।जाकंगी।५३

श्रीक्षण वन भच्च कौरी वन देवल ज्वा विरह
वासिं ब्रजिण उभजि जनिर जाकंगी
उक्त उक्तानु उक्त चिनारी कुटि कुटि
फुलकारी ज्वा चुप्पारी फारी जाकंगी
लीली दुकौरने की मारी दुम-मारन की
मार की मरारन मुरकि परि जाकंगी
के षौ ती मिलोगी न सतेह भौति भावन साँ
ग्रामित शोलोगी बंसुखने मरी जाकंगी
उन्माद सप्तम दशा

कवि इं भैली गुरु भैली के वगिचा बन
भैली के वैली चाहे पाहन परति है
कवि इं नित्तोंकि चाह तरुन तमाछा करि
छूट विलाल घन भुज में धरति है
भैली भई देव पिया माओनि निहरेत है
भैली चाहरते हैं नहीं भिर भिरति है
रासि के सकोंच चाह नौचति नहीं चु ड़ब

याम याम स्वाम को कुछति फिरति है 

व्याख्याति दस्तम दशा

मूर्त नंबर नंबरी की हृद मनोज को ब्रज संभारती कीरि
मुख न खायि न नींद परी परी प्रेम जड़िन के बुर जीरि
ब्रज धरि पल जाति घुरि अभिनाटि के नीर सघास समीरि
ब्रज न जाति बहरि केवल तुम्हें काशु कहा कहा कहाँ काशु की पीरि ।

जोड़ा नम कदा

जो जो कोई कहे सोई सोई करि हारकी देव
कहे सोई कहे करि गयो कहू डाँवरी
राजु करि बाति लाजु करि बाजािकानु
बाजु तौ समाज घर बाहर को घाबरी
रीति की सोीति न बाति बिभारी है
बावरी हूं के सों नयो है ब्रज- बावरी
वीति न साध पाह दोहति न हाथ पाह
कहति न हियो हाथ पाह हप रावरी ।

अभिनवाविति का दशा मध्यर्थी अनुराग

दसम दशा कहना विरह सुद करनि दुख दाग ।
ताते छो नहीं वरनं जो वरनं एक सुविचार फिरे मूर्का बरततु है रस राशि। 

कह दस सङ्क और ।

जीव दिन धन विकिर सुर आधि बड़ि।
हारिक जीवन सारां ऊर्जा दाहर संरि
व्याकुल हूँ नूते भूमि भूमि सीरी भूमि लिख
धेर होगु टैरे हरिली नाम संरि हरि
ताशी सब प्राण पति आएसे सुनाए सुनि
आए तन प्राण कस काल नों साँ लरि हरि
पंकज मुली को मुख पंकज मलिनी भूमि
हेत परजते सफ़ अंग भरि भरि ।

इति पुराङ्गुराङ की दस सङ्क कह दस सङ्क को नाइंक छो विरह निवेदन
कायुन के सलि चिराति दन दाली जो
उबाल लायिक कामिन भसम दाताँ हैततो
को चरसिचरित्र हूँ ते बोरी जो न होती तो
अत्सरी से कुछ दर कैली भौति जीततो
केव जू सरसिस्त्र हमारा दुःख न्यााङ्क न्याङ भरि
नादित बहित चेति करतो जु बीत तो
कौक्ला के टरंत निकसित करिगाती भीव
जो तिहार गुन बुनव उपेत न बीत तो। ।

भी की सिद्धा

दूल है दुहाग दिन दूल है तिहारे तिन
दूल है तिहारे छो क्यान ही दीलू है
मूल है न भाग की प्राणां बो दुख है
दुख है उद्यारो वेल धारो वसुल है
कूल है नहीं को प्रात जूल है गुमान री
कूल है सुहोत तो न जाँच जूल है
कूल है िश में िश्य जूल है न ि बैठ-री
िशार फल जूल है िशार फल जूल है

दूसरी ज्ञा

तानन िरीन बनिकाँच राष्ट्रि सकागि
िाँ िाँ िुम दिवसे िान गान मिलत ही
के ि मुलन के जीते महागि हुम
बैठी की जूल निते मुलन मिलत ही
राहे बात जात बालु बैठु बाजु पुष पतिन-.
समाज भैरिे ग्रेम जो मिलत ही
वृद्धावन का जन्मान बनि भावुरिी
िाँि बनि भावुक हुम है हुम तो मिलत हीं ।

प्रथम प्रमख मिलान

दूसरनि जूल िीस बाजु बनि रूपनि
रूपनि मन मूलन ही मसकि मसकि के
के ि मितुन गुन बरनि बरनि काम
िाँ जो रहे मसकि कसकि कसकि के
िैस उपवन िी स्नन बैठि बीिी
संकेत बुखाँयि िी मित कसकि कसकि के
िैस जनि द्रव िेंभुया मिली मिलान
िाँि ििि िरि बैं कस्तमा मसकि मसकि के

हुम जनि संगम

जागी सब जालनि पठक जव लागी
िाँिनि की नीट बैं नी पयोि मरिंि है
तासपी मल्ल दाल बांध लह लहरे मन
उल्लह मनोरथन मौद भरि लहरे है
उनोद्दि उमे उमेद भरी अभावि बैजलि उर
उरिऊ थिन चूह कोद बहरि लहरे है
भीने पत्र लपटी फूफट गहि मौद भरि
बागादि बनाद विनोड भरि लहरे हैं ॥१५॥

कही को परिवार

बौटनि बोड है कंठनि कंठ सिरै में सियो है
बचे निशान बुधि

gानू में गानू पुजानि मुखा पर वाँचू में
कंक में कंकु धिरि धरि

rही रुझही कही गवलो रौंगही
नयो हिंदु नाता सियो बनि
संग की संग हैं कंग कंग ढाल
लह जने रंग की रेंग ॥१६॥

हरि विनो भावनि रति कही प्राण्यो प्रेम क्षानि
पूणी सिंद सिंगार रस का संगम हुल दानि ॥१७॥

पानु मुख्सिंगार की हुल हुँकीया नारि
प्रथम प्रेम का संग के दरे परे दिन चारि ॥१८॥

हरि श्री महाराज हुमार श्री श्रीसिंह विनोद खेद का विरहित् पूणि सिंगार भावसा
भेद भेदातार प्रथम प्रेम नव संगम कर्णन्त्र दिलीय विनोद ॥१३॥

वध नाहका वरि

दोहा

मुख्य रंगनि सिंगार रस संपति है बाघार
संपति संपति नायक ताजो करत विचार ॥१८॥
क्षु विल चंदर की लिखित खरन खान प्रियों
विभूति विमोच्यत नाहका धीर ग्रीति ब्रह्माण 1900

मनमार वचनाका माया रूप विलासु
मनमार कायक वाक्यिकी लीलन काश्यालासु 1909

तथा कार्या मानकी ने नर निगम बिमोहि
ञानाद बहु विमोहा कहत प्रकाशा देव 1902

कब मानकी द्वार नाहका तता दौ द्वार वर्ष प्रथम नाहका बानंदा

रग सिंहार अन्त हास्य रग क्रुद्धत भव रज रूप
है बानंदा कार्या मन बानंद सरप 1903

यथा

हारों विलास विशेषत हारो न जीवित जीवितविमोहन विवाही
देव विलास दियो वक्तव् मन्त्रज्ञानोज गुरु व ब्रजनाथी
जीवन ज्योति दोष भोजकिजीति जीति लह विद्याक वाक्यिक राति की पूर्णामाती
मैत्री की निव विमोह में वर्यो वेदन तेह तैत्तिरी हैं 1904

कब मानकी त्रितीय क्षण विमोहा

चीर रौड करना रसिकम युन मह वचारे
कही विमोहा तामसी मन तामस पशिबाने 1905

यथा

प्रिया प्रियत नहि नित प्रियति रिचि तिथि जब हजन होगे
है करना उजाखा कथा उजाखा सुवैन ब्रह्माण होगे
देव भू जोतिष विषय में रिस मै निस्वार्थ वीलन होगे
चारुरताक स्त्री सहू चतुर्विनिः शरिरि तत छोग 1906

कब मानकी त्रितीय अवस्था
सत्स गुण महाभक्षक श्रांत न्यक्ष्यतस
परम कल्याण नाथका मन प्रसाद गोविलस 1907

दिनां दस जीवन जीवन री भरिये पचि होइ जु पे महतिवेना
सवे ज्ञू जानति देव शुश्रुण की संपति मौन रही भरि चैना
कहा कियो सृजति कलाप के कार्य दो ग्रिय सृपतल लुढ़िवेना
क्षीण कू के लसी करि चैन कु खु का मोहि रही करि चैना 1908

इहि नाथका की प्रथम कल्याण मानकी

हीत कल्याण मानकी द्वारक वर्षे पर्यत
याँ ही काष्ठ नाथका सांत सात संवत 1906

का नारी की विकाय वरस्था - काल्य

देव अदेव गंधर्व बहु कहे बुध्य गंधर्व
बहु मनुष्य गंधर्व बहु मनुष्य अंस हु सवे 1910

सात सात सम वर्षे पर बासत पाँचीं अंस
नारी वर्षे पैरिस छौ तिघि तिघि अंस प्रस्तव 1911

दे-निच देवि गंधर्व बहु गंधर्वीं निय होइ
हु गंधर्व मानुषीं बहु सुद मानुषीं होइ 1912

पाँचीं कायक मेद करि बहा नाथका पाँच
उपराति पैरिस ले नस की रहति न बाँच 1913

अमर का गौरीं कही लखीं गंधर्वस
मानुष अंस सरस्वती युक्तक करवा 1914

अमर का चंदन उचित गंधर्व संभीग
मानुष अंस सुतसकर आमत सजान लोग 1915

त्यू वर्षे सेवता कन्या मृति वंत
साते दस सत अंस तिघि मलित बुखरात अंत 1916
वासों चौंदह वर्ष छाँ छुड़ मिलित अमास कोग जोग नदि भामिनी याँ अष्ट गंगेश १९२७

याप्ना

नासिका में नया मोही लुरुः क्षिति मुक्तान की कान का बारी
करनी हाय को पति देवकी बारी है ज़रारी
पूरन हें ली बुंदा आनु रूप को मंदिर राज दुलारी
पाकै गोद बढ़ावति मोद विनोद भरी वृषभान दुलारी। १९२५

ब्य देव गंगेश

जी वानंद कौंक वही कौंक लखामवत
शंख गंगेश बूढ़ रत नूः वणे पर्वत। १९२०

देविगंगेश (२)

वृषभानं वंदनैं को बुंदावन गणिरि गिलि
वेलन है बाहं वरणेंही की कुमारिका
युध को उज्यारो बागुयो बोर चिति खुलवति
चंद आचन हिलैये फ़ाही घनवारिका
भूपर भुनू रूप देव बुज वें देवी देविये को
बन देवता भ्य दिवाई वारिका
कोकिकलपी कुम वालत उपा है तित
वाहैं चंद्रीक वौं सरहैं शुक सारिका। १९३९

वाहैं बीट रावती बगभसा भाकिदेवी देवी
देखिये को दाह फिल्हि दुर्ज शाम नाहिं
र्ष लेह बंगरंग मछः के बागंव वह ठारी
वाहै झाँक पगन। उपाहरे
लीने मुख लखान वनिता कौनिया कौनिया की
कृपातिन और ठोर सुरति सराहने
वाप कर वार दूर बंगर संभारे करै
क्योंऽं संद कुदु उक्रारे कार वाहिने। १९२२
गंगा मानुषी यथा

जो लज्जा आकर रंग रंगी सुभाव प्रत्यन्त
हु गंगा मानुषी क्यो बाढ़ीस श्रेर 1923

पंक रुप नैनी संग्रह परवाम ढैढी
बुकाम बिराम रुचि रोफ़िका
तिमो बन कौं राजि महदिराज मानोँ
धेे झारदिन्दू कुमुदिनी धल धौपरिका
उमोकी उमड़ी वे किसाह काल ताना वहि
रंगाविक वर जंग बेष बाहारिका
बाढ़ीयो रंग रागु वेद वरस्वो सुहाग महे
भाग महे मूमि वा सुहाग महे गौपरिका 1924

पीठे पती ने कीने संग की सली बागे
भारद भुषन ढग बहे हौरी हौरी
मौरि मुल मौरित्वियो चौकित कीरित्वियो
मौरि ही उर भरि ढेे नष मौरि मौरि
एक कर बाणी करुपप ही बरे हरे हरे
भाग महे वेद के खिल हौरी हौरी
दूने हाथ साथ हे सुनावत वचन जाति
स्वाति बुनावति मुकुल मान तौरी तौरी 1925

इहि विशिष्ट काव्यिक पांडु विशिष्ट कहत नाख़ा भैरे
वह वरत वानिक वुण जाहि वहानाल वेद 1926

कव्यानिक भेद

कहि मानस काव्य कहे वरतु वानिक भेद
के प्रियहि साहित्य प्रति सुनत हरत विंय वेद 1927
स्वात्मक स्वीकार बहु सामान्य नाते
लिखने खोल की नाहक वास्तव यथा विचारि १३२५
स्वीकार परिवर्ती सो त्रिविष्ठ सुराखा मध्या प्राण
प्रेमिका पर्याय सु उपयोगि रति उजारे बूढ १३२६
सामान्य सं जात में चुन जात सो परनारि
एक चुरा किंडि तीनियाँ तीतारिम निहारि १३३०
बव स्वीकारक के विशेष इमन येद होरठा
बाणापन के बेंज जीवन बंधुरते प्रथम
मध्य भूराति बंध द्रैकी वरनत देव कवि १३३१
तार उपउ कविता भिवेशम सुमाया नाम
वनला रहन क्षाराणा नवल कनां वाम १३३२
रति सहज सिद्धि सुरालि बहु सुराथा क्षु मानि
सुभ्र सीश उराना मध्या क्व विविषि जाति १३३३
मरिय जीवन बाणापत प्राण काम प्रभाव वचन
सुरालि विविषि गृहें सुरक्षी सुरालति वरि १३३४
मान से चोर रहन कीर चीरा चीरि
भर उराणाय भेड वन मध्या गुन गंगीरि १३३५
ठेवा पर्याय वाम रति कोविति वह वलभा
बिरामा वस धर नाम सुरतादिनि बहु हाव १३३५
मध्य प्राण विश्वास स्वात्मक तीनि रूप
सुविश्वास वह से तीस भेड अक्ष १३३७
हरि स्वात्मक के येद पेड़वार कि पर्याया भेड
कहत परकीया भेद दूर कठोर और बुद्धि
बुद्धिजन हाय तालिन, कठोरमूढ़ बुद्धि १३८

उप पति रति कठोर गुप्त गुप्ता करति हस्तमाख
चतुर विदनपा रम्भच ठिठिता पर विलक्षण १३८

कुल्हा रति संतोष नर्ति एविला रति वान्द
पूंजिलिना समीत प्ियल बुखतना दुख देन १४०

भुरत की भुरतांतल मानिनि भ्रमकीिन
वारू विषि कि पर फिया उपपति रति कुल्हीन १४१

एक चैत्य जाति सम सामान्या तिषि नाम
बन चाहि जिषि निश्त नामन्युभान रुप निकाम १४२

तैशित्त डाक्त एक क्रम सीना कालीका
आठ वाह विषि काश्या बुखत चारि चालीस १४३

हिि दी सीहािज कुमार की जैसिनि विनोद देवलि विनिव्वि मानि
कायिक वाचिकि भेद नाहका विरेशा भेद बलान कहिे लूही विनोद:

क्य सुभकीयाचिवाचिक भेद देवीकोण्या यथा:

काहिली सुन्दरा सी फल दूर उमने हतह दुविदूि उन्नी
देवतििु उरलाखिु दो नव हूहि के सित रोप दुवीिु
जैमिन हो हतह बवि हारि तिफारििे हे देविु दारििे कुल्हीिु
क्यन की दिवितीिि इतिकिििा यह दशिििे क्रिि देविु १४४

क्य मुखावय: संििििि

१४५ १५५	अग्निि क्यि न्याय जोिना वारमि
पूरा बणित्रुिण्या सौंिैिे स्मालनाम १४५
जानति नाहिं बहे हि डेरिंगु भेलत में दे सेवण तृप्यो
शाती क्षू उभरातीं की जावल पान भारी लगी क्षू तृप्यो
कोशन मीन मनो उवरी हुँकियो जनतीमं ढारिंगु तृप्यो
वालीं बाँट कुलाँग हरे पिय िल बहे शेरि के मुख तृप्यो। १५५६

वय संधिया (१)

बैठी वृषभाति कारोरि जैति की पीर बार
आशं नंद कार कर गही पूँछ दोना है
बेरे बेरे दुनाहै खेल सुभोजन ओरि चम
धूमो सो जुनति दुनाहै हित होना है
चंकल ककल रही कंकल रदन दांवि
चंकल न लेख दुखल करोना है
टोना को करत लसे कोन दुश्मे बोर सृप्यो
तिविना उत्त वृप्यो नाहिं होना है। १५५७

बार की पीर वं दौराति दुरी दुराय ईशानि हुँरे दुरी बे गैठे
मृति के वातन की वहाराय हरे वहाराय करे वुरिंगु के वैठे
देव कहा कही देशत की बने दौरी लगाइ दादरि के बे गैठे
चारोरि म चेलज चारोरि की लागति मोई सुरोरिमुरे पुरे गैठे। १५५८

नव जोवना

लोग जो बाल लडावत हैं ले वीकानि मौखनि मात अप्सूियो
त्या तरण वसनिया में हूँ सिसियाणु डंग वै दौड़नि ब्रूंयो
बंधु की वशिष्या में लैकलिवेक क्षू खरिया उरु, भूंयो
पानि को चित बाइकावो कल लेवटु लोग वाधन ब्रूंयो। १५५६

नव करमा (१)

बैठी कारोरि में बैठीवृद्द उत पीड़ि चिंग पिय हीरि सकोन
दनि की मुदरी इलग वे पिय को प्रजि सिमकले दुह मोचन
शहर पर घाय निहारत नाह की चिर वाह-गड़ी पुर सोंचत
देव सु भोजन ने उपजाह भजाणे वाह ठाजाके लोचन १५५०

संज्ञारति (५)

दूध संग नहे दुर्दहियु तहे उल्लक घुड़े खुल सा है
देव लगाहिये के हि ठगा मुख माल्य राेरिंग हृदारति का है
भोज उच वंडियां सकुभ सुभा को उपजाह न पुरारिंग नहै
सांकन मैं सिकारे रिंस की धुम हारति नाहिं निहारति ना है १५५२

मुग्घा सुरति (५)

बैरिन मेरी ठगा मैं छरे कर क्रोड़ि उहे फिन देलन तूं है
याँ क्रिया छे उनकी पर जूते पूरी रही गुढ़ वारी की छूंदे
जोरिन केर नहीं मुख छो मुख होरतु देव न नीली की छूंदे
देव सकौचि धोचि के मृगालिति ठाल के लोचन मूदे १५५२

मुग्घा सुरति (६)

वरे मृक से मुख केंडे छे बंग परे परजें वे चारन बाल
उसासम है उनकी क्रिया हुँ खैर सरार की क्रिया कौज रूप रसाल
वृत्तिये होटिलिये भरि नैन कारोटन हैन क्रिया तलकाल
वे हुभु बनन बनाल जैसे बही देव नहीं भें मौली की माल १५५४

मुग्घा की शिता (७)

दौर से दादि गोरे मौल काल कोरे क्रिति निरहुरे पी को भन्नियाकूरी
मेरी छूम मुखी हैरी भूमिति सुभुक बैरी छिरे बुख बंड रूप चष्परि चारुरी
देव हुषाणाति वन्यूष मृक करे नेहु रूढ़ि केर वन चारु हुषान भारुरी
निमूट छन्दी गर्विती ए रसीली अनशीली चिन बौछि अनोघी हत
रामश्री।
पुष्पा को उरार्न (१)
हुम के बुंद बालिका विज्ञान निदार्शन हारी चैत रस पानी
ने को स्वार क्वार भा सब पानी विज्ञान बहानी. बागानी
देविके सौंदे देव धारी दरिदंति वेदुर्करी निदर्शणी
देशाति है तुषिया दुरि द्वार हूँ है बसनी दोरि दरिदंति लागी। १५४६
इति विष्णु मुख - अथ मध्य्य प्रेष तत्व दां वरुण जोतना (१)

अनं वरन महा कोणत करचर तस्तसन
हुरेन अनं अंकवल्लिन को
सांस को सरद सरस कंतर में अध हुल्लो
वारिज हु पुन्नो की प्रभा कल्लिलन को
सहज सुखं ही मध्य धुः कर कहौँ
को गणे सुखं वार सांथि समशन को
जैलिन को जूह देव दीपवर्ति दुरुरह देवोऽ
देशत समुह जात पूर्ण समशन को। १५४७

प्रथं काम (२)
लालचिति देशिवे को लालव लर्नोऽ देव
होतसशे लागी होक दाह तड़ति है
बोरी वार देशकी क्वाति घर काज भिङु
धरिया की घरन घरीकु टह्चाति है
रजित को सकोश रजिता दू भ किनन देशु
हो दुर्कला के बुनका में कहराति है
क्षेत्र वै सुखान हो नहीं न क्षरत मन
गांव तौ सुखान महिरे को कहराति है। १५५

प्रथं वचन (३)
हुमि उपकरसिनी है की वे पा पैजंति देविनिर्म्यान रामकी है
न हो बुंद कों पिना करो बैं सकोश को में सम्माति है।
छुटू न घराकी मौन घड़ी बिहियान की जीभो न छागती है
विनटी सुनी केवल जू बोलों हरे दुखिया वे श्याह ठार जागती हैं। १५५८

विचित्र सुरता (४)

बीट पट हुंगे हैं संसानि मसाल लिए निकली रसाल भूमि भाल तामिलकुटी
तालधारी नूर पुलिंगु लू बोले ताल रसना रसाल जुरी चाल चाहू चिह्नी
मंजरि उठार पुर कार मंज नदनि बरन चारु बुझाड़ी
स्वरल्लिन सुकन निर जन ठागी अभियान चन ठागी सुकुटी। १५६०

मथ्या सुरता (५)

छुटू गच्छीनी परभंक में बंबक मुली
सूदनर संसक बंक संकि चरति ही
बौधनि बीठि बटीकी मापू तेहति मराठि
सुनाशा कन तौरति ज्ञाति ही
साँह सतरति वतरति बतरति हो
मुहतरि बसुहति कुर लीर बसति ही
बाँधू दूह दोहल उसाल दिय जालल
सुरोशति रिसाति ही करतन हंसति ही। १५६२

दुर्दथा सुरतां (६)

क्षेत्र ही घरनि पर पाय की घरनि रद उते घरनि सबहर निलार दुररेल
छूटी की कटनि छो चंस जुग देख कह दूट हुरिंगरी बिहति हुरु हुरी देह
वार हार कसानि दासन न पाये मार बोलुंकहार बाघ कुरु हुरी हेत
मैं निज टैरि टैरि शैरि को फीठी झुक पीछो झुक हैरि फोरि झुर हुरि हेत। १५६२

अध मथ्यामान (७)

वक्षोकति यति सो केह मथ्या धीरा नारि
मथ्य मथ्य उराभनी कचन अक्षीरा गारि। १५६३
मथ्या धीरा (६)

मौरंछिन बाह्य यथा कौर गौड़ बैठिये कपन वैलि मंगाएं
बौद्धनि बंजन लीक हैं वैलि देव दूर हैं पल पीक लगाएं
वानन मैं जारे बगरे गुल बाल गरे रंग रैनन लगाएं। १६५
कोहन लौहन छाते लम्बे जिन्‌हे कोहन लौहन त्यान लगाएं।

मथ्या धीरा धीरा (१०)

तन मन बौद पट कपत घूंघट सोचि उरसः मगाहरंति मै बासंत हौं
था की अन्याय कपन से हौं उपाय कौर भर कपने न सुपने हौं न धिरात हौं
कोर्णे विकिंघ नील कुमिर वरमाई जाके विरह बौरा नै देव बौलत रङ्गाण हौं
प्यारे परजक हूं मैं नो मुख मरक हूं मैं सासे है सरबर बेंक हैं कल्सात हैं। १६६

हति कस विषि मथ्या- कर प्रङ्गळ रथ्या ’यथा ’

कै शुष्क सतन विराज्ञत वदन तारे फेलत, मदन फानु राज्या रति राग रौं
वार दूर बैतरी नचाई तरिवन नटित लंक लमस गरि भाल दूर विंमाण रौं
मुखुट सख्ल चाहु विकिंघ दौल बरी मानी सहचरी करी हौं है अनुराग रौं
वयर सतन दुष्टि वदन अंद मंद हृदरी सनि सनि रौंह है भुलाग रौं। १६७

रति कौविदा (२)

सासे जीति जीति रिसाति मुंदु बौलति
कैयाणे जीत लाज उर जानि परि गाह है
पूंछुंट उधारि मुंदु देवन जीति रूं
रेखि कनेजनि की जानि परिगह है
बैठ झुकवानि झुण दाहनि को संग देखि
साति झुण दाहनि के दानि परि गइ है
तानि पट लोक हृद पानि पर बैन रूप
पानिय निन्हारिए की दानि परि गइ है । १६५

वस बलमा २१
पीड़ि पीड़ि झीत लैं सादूः हृद वैलिति है
शीति है छूटि झुणानि दुर्बांत है
पूरा पन मै विपस्त्त्ति पाउँड़ि से
पीड़ि हृद मूले देशा देशि मै दुर्बांत है
बैट सत्यानि की विराज अविकान लब
ति सुहृति देशि बनदेशिनि दुर्बांत है
हंदु वदनी के बरादित के वदन,छाम
निविनि गुरुविनि आरविनि हृणादि हैं । १६५

सविनम रना २४
पिय के किय जी करति प्रीति उपजी करति
नापः के नबीफ रचि की मैं हृदी करति
त्यौरी तिरी करति नावा मौर की करति
बायी हृदी की करति सांस उस सी करति
देव श्रम की करति कर भर की करति
जो ही भरसी करति सोहिक बरसी करति
ती करति जोगिनिकी करति
प्रीति निर्निर्नि साहि की करति माहनि हंसी करति । १७०
इ प्रसूरत कृती (१)
कवि देव राये करनि दूरस्या पर बेंकाल रास सुनर्ध रख रसना लच्छो है
मृदु मानि मनितनि बलिगान क्षणिनि निरलम परि रंभ उर वसी हूँ रखयः है
प्रोक्ति विलास बोट हुक्का उत्कर पदु लटकन मोटी नद चढ़ी नष्ट हैं
विलु मंगल पुलिन्याक्त मंगलन मध्य तारों मंगल विलास रास मंगल रचनी हैं।

क्य बोक्षा बुरलाऊं (६)

तीनि कट लाटीन निकट वन राजीय नंद विक्षण चरणि बुरा गंधूर वापस हैं
कर फला उभरत विविचारु दूरे डूरने पुड़े पुड़े बाँधि सोंकौंचक हैं।
बिंदू फूल बाँधि बाँधि बलि दाँति दुष्यंजन मंगर मन रंजन सवास हैं।
कृति गुरु वुध मान मंद हलवाछ जीन के बेन रविवोलत मोंकि दमाल हैं।

भूरा बीरा क्षण (७)

दूरी ही के बादर उदारि इन बादर शो उपड़ती जोरि निरांि जोरि ही को ज्येष्ठ
सावर अच्छ उत्कार ही बारी ही गिरा ही गधि बारी कौट कपट कपट घाँ
भूघरी कुटि नटी नटानोटी एकी मंद विक्षणि रुटी बलन कपड़ कर
सावर हूँ कला बटखों बल्हों लल्यों इत्यादि पर बधान की हर निस्कोषरिज धारिणी।

भूरा बीरा बीरा (८)

जोरि जोरि राजीय जोरि यह राजीय शो निचोरिज बोरि बाँधो मधू माथ्यो
सचिमन को।
लोचि पुख भूरणि वरारें रूट धरणि कव्यो नोचि ततु पैरिष मन पोचे पंचिभक्ति
निकट कपट ब्रम्ल लापट जीम उद्विगरति चाँदू सो उचाट सचिमन को।
केश सचिमानि शुष्यदानि पुख देयि दुर मानियो कामु दुष्यमान विचळानि को।

बीरा बीरा बीरा (६)

चाचरि नाचे निस्चारि के गह सोह लिहारि सनेह सनेहि
छोड़ि हे सुंग दाळ गुड़ि लघु रूपे केवली सी उपारैि
पूर्वशुद्धि चारि फागू करीक्ति इति न जो दिन माह गनेहि
लागी लहा नक्का सी निंद सोह दाळ हमें गुझ चांहे बनेहि।
हरि श्रृंगार पात्र सुख सुकिया के लील में - सुकिया की स्मृति

हीरकति वहाँ मृदु बोलति जैसी डूंगरी कपाट बोलति आकस्मिक है
सकल सुभाष पाति पूजन उपाह वर्याँ हूँ तू हूँत न पाह कहूँ घाटन घड़ियाँ
इति रवि रंगु करि दरण इसी चुप चुप करि देव खारित तू हूँ संगति
इस गुन जीवन चटीयों चर्चनि यादी के देश धरी मृति कथिति है। १७६

सहज स्मृति

श्रीपद-श्रृंगार विलास वर्दी तारां चंद्रवा
श्रीस फूर्ती श्रीस कैलसव उदाहर है
मांग की मुहांग पापिर बासु जराज बौरिरी
तरियं देव दौरा केवल संखिय है
भाँड़ तट नील लाल बागर सिलसीली
हौलन कमल नायक मुकतन श्रीपि है
सफारी संगति पर तारी तारी गुन गोरी
रायंके रोरी न कौल गुज मंद महीप है। १७७

हरि श्री मन्नाहराज कुमार श्री शैलिष्ठविनौद वेदत्र चिनोगे मुख्य श्रुंगार
पात्र सुकिया भेद भेदात्तर बननों नाम जलूह विवौह - सुकिया की वसाडिक
भेदात्तर -

सुकिया की वसाडिक भेदात्तर

द्वार कथा हाव दस खदिप सफ़ल त्रियानि
लदिप सुकंधि कृमले कहाँ मुख्य ध्यान प्रौढ़ानि। १७८
मुख्या त्रिया की द्वार कहीं भूमि वदुराग
कसावस्या मध्या न की वरनू भूमी समाग। १७६
स्वायत्री वासक वर्दी उत्का शेषिक वार
कह हंसरी विमाणवर्ण पति कृत विनिशार ।१८०
वाच कल्पित सुभव वर्तमान मत प्रायोगिन
वासक सज्जा रोज कै साक्षात प्रायोगिन । १५२
पिय भागम चिति तमै उत कर्णत चित्रविति
चंद्रत वासु चंद्रिका प्रातःह भावत मति । १५२
क्षय कल्पतरुवति कल्ह कारल प्रतिसां फिकरि पनकिताह
चिपुलक तितिसि नामिनि है पिय कैसत ब्रताह । १५३
बन्ध्यार प्रिय ग्रंथकेस समय समान सहुप
प्रामण्डित तिति परेष्ठ पति है गयां क्षेत्र वृन्द । १५४

अग्नि स्वाधीन पतिता (१)

लोकके कपाट दीन अंकर कपाट रंग रावणी में बौट द्वैर सूर्यभुदात ही
पोष्ठित कपालिन अत्याव्रत उरोजनि विक्र्षिण्ति सुदेश केंद्र चोठा कुमाटि है
केंद्रुक्षण संग की उमगनि वाहिनी देव स्वसु गमावें अंग की हृद उक्माटि है
मैही रजान का पाहन महा़त है देश्यति के नेष्ठि स्थान मंत्राण नपिति है । १५५

वासक सज्जा (२)

उत्का यथा (३)

क्षेत्र को साज सवं सच्चा बुद्धीकृत के समागम भी को सुनहै
वीतो सवं कहिया तो भयां हरिभीतो कहन चित शीतलयुक्ति
स्वसु कैंठा देव सवं जो कौँ वाह संकेतो कहं निन्दित्ति
जालिनि जालिनियों कसे वाह परी नवाल ज्वर्य ठाप सुनहै। १५६
चंडिता (४)
लाल लाल लोहन म्होहन दासु दीनो
कोहन स्मरित लोही कोहन कोहली
सेव किनी स्मारी करावे सेवकिन जानिन
देव किनी निमिशि कृपा कै नेक बोहली
राग रंग मणी अतूराण ज्ञानी संग
जगी स्व रौनी डंग मणी डंग बोहली
ललके बलके पट बलके भरके पट
वल के फलके पट मृदिद मृदिद बोहली। १८६
कठ संतरिता (५)
प्राण प्यारे पति को क्वाति कपमान देव जानत न प्राण अर्थ प्राणन भाव कसीं
रौंखियाँ समसात वाट कहत सहारत न हवा उल पात उपालक की बोत कसीं
कोस्तु ह्य बापु असोस कै बापु हरि रोंख करि हवा वाभि काराणि कसीं
पूड़े किन कोहेन हय्यह सोहि पक्षतांति कहा सूरहत खो खिल मृकत हात कसीं। १८६
सिकुल्य (६)
सुषंदे वपुषं वनु सुन्यो बुढ़ बुड़े दिशारें है वार उशिति रोश स्वास धरकनि
बांटक उत्किर चित्र चित्रि चितल बूढ़ मुकुत धरानि चहरानि बुढ़ धरकनि
रूप भरे भोरे वं भुज अन्यारी उप कोरिन डावारे बुढ़ धरकनि
देव बहनले बहनले रिस कीविति सुधाम घुि अन्ध सुधाम केर फरकनि। १८६
बांशारिका (७)
मारी रिचि मैरे चिकि बाछारी देव दिस सिस
कारी घटा विरिति विरिति लागती न जीक ही
गरनि कसी के ध्यान कसी जोवी भैस्यानि
कसी कसी केलनु पगनि का नीक ही
फिलिप्तु की केल गैल पैलि नुमर्गा गन
पशुकुच चुरान मैदी कॉकिल की चूक ही
देव मूंडर काणन काणन जान न सुने
जानन उतारे सी भिजवति बाहे हीक ही ११६९

विवानिसारिका (८)

चंड का मंडल ते गुरियम प्रचंड चापु।
हुग्गूरो फिरारमति भूमि मंडल बनष्ट धार।
भूमि वनीचा देव लखली ठारनिय छै।
बुझली दिवारी उल्लेह ज्यालिह ठाडार।
तुलन मंडल नूत पत्थरनि हुँदे क्ष्रें।
स्वाभवित सुिणावत पन सार।
तन मंडल क्षमिन कनक नूपर पाव।
बाह गहे कनक मनकनि भनक वार। १६३

प्राप्तित पतिका (६)

पावस प्रथम पिय बाई की क्वालिनि सी जो बाहे तले बोळतार वृति आवरति
नाहिं तौं न कृष्ण हों न देवी की ब्रह्मण सरी भ्रातम ही मारु भाषा राष्ट्र पन
कारनि।
केरुरी वररुची कहु गाजु न गाजु जन गाजु मारे मोर मुका मौरी री निरा्तिरनि
संग कौसक कौफिक निकूंच् नाचि चावलिनि दूरि करुवारु विदा कौरी वायरनि। १६३

प्रस्त्यतपतिका (६)

पूरुल जे पुन्ननि में देखी की दमक देव काश्य बाहे कैसरि कनक ही
जीव की न बाहे कहैं कौदी। पृथ्वी प्रायस बारु। भूलक उतारा वेंसी। जानन कनकी
सींते दुष दुषि चिक्या विरह विरहि सृष्टि मंडली की मंचलन छै। गहे लक ली
प्रात पदेस को चौहे भुषावादकक हुमाहार बाहे बंडी नाखाक मनक ही। १६४

बागभिष्य पतिका (६)
धारे बोरिये बोरिये बक्से पिय आगम दी कोरिये कोरिये भरति, रस भावनि भरति है
बोरिये बोरिये बक्से मिसारति विहार पुरिये बोरिये बाँटक खरसी उपरति है
के कर बोरिये बोरिये बक्से बुरति बोरिये के लोटेन बोरिये पत्रन परति है
बोरिये बोरिये माल पूरे पोतिन की चैफे निदारिये को हारि बोरिये मूरति घरति है। १८५४

आगम परिया (ग)

बोरि के बोरि बकसक बाणे मुझे बाड़ ज्यों ज्यान मे दिनरानी
के बोरि दोन मुंह है बोरिया भोरिया रसी जिया भोरिया के टिया रानी
स्थानक आगम ज्यों बुझा हरणी वरणी परणी बिया रानी
क्रीरी ही भोरी रंगी उपनी ही बाजी को क्रीरी माँगी क्रीरी टिया रानी। १८५५

प्रायम के मुंट की के फिर फाँस फाँस बाणे मायू चलि बाणे तो फिरा बाणेद क्रीरे की
स्वास्थ्य भरति रकी विहा बीन वात विस की ही वैश वाती उजमित हिय कव दी
देवली बोरिये पहुँ दोनों पिय बायले को बास दृश की भक्षाम में कूरा बूबे कये की
निष्टायो न दुख उपयुक्त न मुख पूछात में साक्षो सकातनो मुख बंद हूँ। १८५६

हति महत्ता की डस्तावेज़ा - को प्राया के दस हाव

दौँ

हीरा बोरि बिलास कहि अंि चिन्हक बिलोक बिहा कहि बिनतिहरह बिया बोक। १८५७

हाँ

को जूसमित कोवि बिहा बिन कहि लिक्ति लिक्ति दस हाव

तिंग को पिय संयोग में पुमट केष्टा नाव। १८५८

ब्रुम ते बक्षन दोहा

कूमट वैष्णवणा कुरिये हीरा में रस हांके
सरस नालन मन वचन रुकल्को रचन बिलास। २०००

लय मांहन विशिष्ट में मन अभिमान विशेष

बिम्ब मौ कु मनोदेह उड़ भूणम वैष्ण । २०१
क्योंकि विशिष्ट वक्तव्य भूत मुद्रा मदरसा रिस मान
भित्ति क्रस स्रोतालित मुद्रा मदरसा वानत जान। २०२

मन में सुब संकट क्रस प्रस्तुत कूटमित हाव
पिय सवोशा वित्तोक वहु लुग मौनिन के भाव। २०३

क्योंकि गौ भिसिलाज क्या विशिष्ट जान तन जान
लिहित शार रचना लिहित वरनत सुकवि भूजान। २०४

क्यों चीलय हाव

राज्यी क्रम मोर सु मोर पत्था चरि क्रान पत्था मुल राजि कराल
वरी मुखी वचाराय है मुखी सुखीन २ है वैस राखाल
पटवर काँवी पीत पत्र चरि वालम वेदु वनावति वालर
उराजनि फौजनि वारिवे को सूरे ही सरीहनि की मृदू माल। २०५

क्यों-विलास हाव

केवल सुखरण गुन कंध्यू है मधुर महा बोध वजारे के संधर हुष्ठार में
पंद मुखवानि पटु तानि पट नय को सुन्त को सिरर तिरार भैं
छक्क वित्तानि तानि तौर तुदरमानिनि भरक़े कपोल बंडी लक़ी विलात में
मौती छटकने को नकल नत नाचे सदा मैनवु जान के चुडल चत्सार में। २०६

क्या विशिष्ट हाव

भूषणेन धारण जरूर चरे होरि सुर्ब प्रमोर विलाजैं
थे/थे फिरौर पीयिरे पट फीसके सुनी को लोग मुख ही के उज्ज्वलहे
वंदन बैसी विलात लोग उरी चारि सुहाग कों रात्रि पत्सारहे
हाव लोग बारांदन बैराजी निष्कानि कर विदानि हारिये। २०७

विष्रुम हाव
विश्राम हाव

लाह तरी छहगा कस्ती काही भूतक सारी कस्ती कर लैकी 
माथे मिश्र मुटा फसलात हुठी खोजें कोई हवि कस्ती। 
काही ऋणी विन कंगकी अंतर सूरी रहे न कबसी न कोई 
वेळ जू वात सवे बनि बाय जी कापै बने बनि जय तू कस्ती। २०८

का सिविसिविच हाव

लाहत ही त्या के त्या सूरी दिन मो हिरही त्या काम क्षानि ने 
केव संजोग जो उमो उर था ही वार सवे अडाणी ने 
ही में शुलाश गरे सिलिका वर्ता एसी कुशा जीमिया 
स्वास में स्वास विलास में रोसू भौतिक में वरह में कुछ कामिन में। २०६

का मोटाहर हाव

रेणि में घृणि छो केव मुराद मूँडे रहे देव दिन कर दुति देव दीवर दिन को 
वाम वाह नाह ये समीप उड़ादा भरी हाय में आठ ली न हवाई हाय हिनंकों 
वार किन्ही नहीं सड़क जो जाने अनीसी हीति अनेक शरीर की बननि विनं निमों 
वेलंगमि उरने लें न सुकानवै कोण इसको कुशाय सुमुखाय कोण हनको को। २१०

का कुटिलित हाव

कंगकी सकिज कुछ कंवित के लोही तीज 
बहननि बोल तीज सूरी समुहाति है 
भारत नू में वरसा रग है नू में देव रघुना 
बुनमि दंत दाय विविभिषि है 
विमुणि हृदि त्या दुष्पति मुख पावति त्या 
सनमुख मुख ये पहुँच घाल घाति है 
अंग पति के विपति रंग संग रै 
छोटू हैरि सूरजपूर विवेश विविधाति है।
विवेक हाव

प्रीति मीत अनन्त न छो मिलि प्राताहिन बार है प्रेति सुभावक
शोद न शात उनीद में छोटन छोटन ते तिकों जनु जावक
कौपले चितले भिय त्याँ तिय नैन नवाह नवाह ज्यों पावक
dेव मनोज मनोज क्लायो चितलेन में झून सरोज में चावक । २३२

विहृत हाव

वैष्णव सत्यान न रीन मधो मुख देव गुपाल गए अतुरागे
त्याँ उत्सुक भैलन पटा में भूष के उफके झा प्रेम सो पागे
फुक ता कट जाव डिमाग रही भिंप लोहव धूमि समानेन
काम द लाल बी चितु नेंद लाल कद मधालच लागे । २३३

रचित हाव

लागत समीर लंबू लंबे समुल के पूछके दुःखनिन चरण विध्यायो पर्रे
लंबू सो बदन मंद हासी सुखा विंद ज्याँ मुक्ति मकरदिन धुरायो पर्रे
रचित रिखार ज्ञान कल्यंत कल्य भार मग में चरत पण जावक धुरायो पर्रे
देव मनि नूलु पदन पद हू पर ह्वू धुलर नूलु रंग धुपनि धुरायो पर्रे । २३४

हति प्रीठा के वस हाव हति मुख्य आँगार पूर्व स्वाकिय्या को पूर्वायुराग
प्रथम संग कसाका अस्स्या हाव वननेन

अथ स्वाकिया विषय गाह आँगार मान प्रवास करनादिनिनिरूप न

वाद पूर्वायुराग वियोग में होत विंगार संगीयाग
पीछे मान प्रवास बरो कहनालम दुःख भोग । २३५

लार्य पूर्वायुराग रस मुख्य सिंगार संजीयाग
मानाकित रस गाह हें क्रोध विरह बरो भोग । २३६
प्रारंभिक मान किया भी रौंद कोष प्रकाश
कह ताम रस करन मय सक्षेत्र विरह प्रकाश ।२१७

वाते मानानिक मलिन ऋणप्रकरण परिबोध
साप घुट पंचम विरहें हो प्रकाश के योग ।२१८

क्य मान किया अंगार

गुंगि गुंगि उदयों चरी वरंची निकुंज रहि
गुंगि काव्य हुंज रहि विरचि विचार में
देवको क्रोध देवीरी कुशेस रीति स्याहों कैंठि
भूखुंटों कैंठि पूर्ण शिक्षित महार में
गीते जिते की जव गुहा जगहीते, उठि
उठि हौस कीने रीते सस्क हुंकार में
मारे वृं पाहल घुमारे कर साहल
खमारे जान मान महाराज की जिराह में ।२१६

मान कंधु जीराबलिनि तहाँ न कृति द्रम
शुद्ध मान भिन द्रम रस है कुदान को हथ कर ।२२०

प्रकाश किया अंगार

जीवन नाथ कहा जन जीवन संग पवारों कराए
तावितु जीव जो चाहे जियाओ ती जियाओ जिन माहें भी विस्तिरों
जीवि गए कहीं जिन सुख हाँ हितु एक नपार पररों
देव महा दुर्योगि विक्षण के दुष्च न भोपर देखो पररों ।२२१

कर्मणात्मक वियोग

नष्ठ विषं अंत मह एक तत्त्व ताहि तकि
वाहल गयो मक्की नामु निर मोक छो
नीक्षु छुल जीके सुखवाक सुषुष्क मुष्म
सुनुष्म देसी देव भान्द के बोक छो
एक बार नेह्व किन कथिते को मानाँ देव
राणा पैर मोहि सहिते को इस सोकोरूै
मेरे प्रान नाथ मेरे प्रान साथ रहे न
तो जानल केले जानैहं परालोक रहे।
क्या मानवियोग भेद?

लघु मध्यम गुरु मान परमु दुसित अन्य संभाग
ज्ञेष्टा कविता बकु बकुग मादिक सुझाव जोग। २२३
क्या लघुमध्यम गुरु मानक विच

सौति निलानिन निली दुसिते पिय रूढि रही हु लसि हंसि बोली
घोषण ढेरिति वानी चुने बातरानी हु बोलने के रिश बोली
ता संग बोलते वाह भ्राम प्रभात प्रभातक पाव परे हूँन होली
केली कुटी भकुटी चिकटी नम माल खुजाची वकात कोली। २२४
क्या गुरु मान

मनी मनुष्यि मन होरे गो उसी सयद दासिन गो दुसित रही रंगा चुकि चभासी
बारसी मल निंदा सारी ही चल विनु बानंद टल वेळ मन विश्व चभासी
बोले सुन्द मोरे सुक सारिका वेलिय चुंद रोश न रूख वाहि मानि रही कंभासी
संग के सकल अंग बकल उकाह भें बौद्धि न सुभाति सारी वन संभासी। २२५

अन्य संभाग दुसिता

सूरमन कोली हालिको वो वाली बलि कोली फवन उपवन ल्याम्बियुँकर्के
वहण वरण के तत्तम सुरंग देशि अमक कुंडङ संग टकयो ढंग हरि के
पायो भंसिल मलन बियो सबि निसिक दे दंग ही मलन मं मुसिके
जान्यो न दुर्यो वाम वच मुहूँ करनी कवित बी विवारी अक्षर-अक्षर कोली हुसिके। २२६

ज्ञेष्टा कविता यथा.
कैल भाषिक सूखित वस्त्र से वायुकी दादी भाग सुषा दादी।
कैली पृथि प्रृथि प्रृथि पुराने पर देवजू भूमिर हरित चाड़ाई
मृद के बढ़ ही के कैल सु हुई गृह नौहान गृह मृद
पठाड़ जूने के टुग को लुगे हत मौन जिया कलिया सलिगाह़। २२७

व्हूँसहित गायित्व

बैली नीली कृतिवन जैसी कैली सैकी चक्ती दिखा दरौ है गो
सबसों जोवन का हार है गो सोढी सबसों जोवन को हार है गो
होने दे साँझ साँझर माफ़ सुवार कनोदन को पती है गो
देव के वारित मुदी के पार पून्याकों को हुदू उदे के है गो। २२८

हरि श्री मनोहराण कुमार श्री जैनकिश्व विनोद देवजू विरीमल गोन शृंगार पाप
सुकीया भेद भेदांते पंचम विनोद:

अव परमन्या जगा यथा

या जिय को पुल काशो कहै सूखी को सुखीम न दोलति डाली
कौठी विकाहर हाती के घाटन हौं चबालन की लित वांती
मेरीहै नौहान राहे लंगर जो नहरा तो मारी फल ताही
हाजनवाहन मोहावी यह वारित दाज पौन निवाही। २२६

जगा को उराननी

रावरे रूप लता लक्षवाती मै जानी न काही विकाहियाँ ऐसी
है सत कीन सताई न तो लूज संगति ते उतरी उत लकी
न्यायिन वैरी न हो यह नैह को देव दुरीन हुमे हमी नैही
देशिचे ही को भरे सिकसी तिनके रिश की चरवा कहो कैली। २३०
कवि प्रेमचिन्ह जड़ा

थेरी थिरी घर में नैवरी कुछ कुंजन में कहि काँधि निमैरी
ढाढ़ी बलि शहेली पड़ाह ग्राम अंडात सो मुखि चनैरी
ल्याँि उन्हें गधराह दहर हाँगि तो ही वही तहन हाँह लैरी
आस तै या वन वा वन माली मिले विति बाजी न मौिक बैरी।२३१

कवि बुद्धा

मौिक हालि भक्ति भूमक बारी हाँि हंदीरा मंदर देव दुति बंदपप्पली
कामगी जाँचि के ब्रजब वरिश ती बच बराघ मति पाटी सापकी
वारिश बलि बीच तारापप्टि के नबीक तरिनि.तिमि तरे तरप तरप की
बाजी कंि बोफल के उन्ही भरोसों गूं सावक धरििक नाम पावक भरपप्ली।२३२

जीिन भूसन रूप गुंस कील विश्रुतिि नैम
बाध की नाशका बल किशि पूरन प्रेम २३३

इन अवैिन स्वकीया कहँ परक्ष्या कुलेश न
विभवी कील कुल नैम विति वेस्या हौँ प्रेमि।२३४

तारी स्वकीया शुड रस कीया रस प्रेम
गुप्तालिक जट नेप चिरि तहां न रसको नैम २३५

प्रकीया के गुप्तालिक जट नेप

गुप्ता विबचवालिता कुल्ता सुंदिता जानि
बनस्याना जट नेप,प्रकीया रस हानि।२३६

उठायहि रत कवमच मनहा उपपति हीन
कन्या प्रोढ हु बुद्धा गुरु बंधुनि बाखीन।२३७

गुप्ता रहे उप पतिि कंिि कुल विदम् वकव हे
लक्षि लयान लिपििा कुलता जलं ध्वनि।२३७
भारतीय धर्मचर्य अनुसार ब्रह्मनाम एवं गुप्तादि सुभाष 1238

चद नेद यथा

कों राति के बाद बालू छलन जिम्मे बीज खुशाल की छीपि उठरती है
बाढ़ का जाम चाम कैमकृत्ति मंगायाति देव राज्यन पराति बरति बानांद करति है
फागू गए फीली जिन्हें हठी जीवि पूल माल हरि ही की देशि दूली साधुरति है
मानि मिसकी न कोई न जानी मिसकीन घात रित की जाल वात मिली भरति है। 236

हरि परकीया बेद भेदांतर का सामान्या

सामान्या

बाज खिले बुधब दिन मालवे भटवि भेज कदु खुश मात्रों
ए मुज मृणाल भो मुज वांचि मुजा भरि बोटे बचे बचावरों
हीनि माहि उठाई की पढ़ कीजिे छ जिय जो अभिज्ञानिे
प्यार छे हैं तुमः अंति पाराति हार उतारि हैं घरि राज्यें । 280

एक मुख सव त्रिमि में पैद सु प्रेम विवेक
पारी धीरी घार में बरग सव एक । 281

मुखाल्फक कम सकीया वान ५ वेद ४ बाप वेद ५
हे परकीया २ रत्नया एक १ दारेदार मेद । 282

एक एक कदु व्यक्त बातेंजि सो एक
हे उदम मधि श्रीवांनसां चौरसी सुविवेक । 283

सव गुमसे उठामा अक्षा वास्क रूप
रजौदान बंकी मध्यमा त्रिमि सुभाष ब्रूप । 284
देखनी को उदाहरण

एक अणां धिना अपराप पह वाह जु दीन चरें ते 
राम कु छ भी रहस्य न लूके ने ही से की सुनाह डरे ते 
रामधे को साथ साथ लियो कु छ वैन हुने अपराप करें 
ज्ञान ज्ञानिय ने पातन वे उठात न बाँटे के बुंद परें 

इति नाइका मुख्य गान राखवी प्राणीन मतीन हे पॉरा पेश कीन 
मत तीन से चावालीस - अय नागक

अय नागक

सुन्द प्रस्त वाह चुर पति गुप्त यु प्राण जनिष्ट 
कपले नायक चारी बनकु छ का संग प्रस्त 

एक नारी बनकु छ तिया नियन संग करा 
संग कु छ अकु छता वाप श्रेष्ठ भक्ता 

इति नागक

बनकु छ 

जीर की चाहत चाहत हे सित वाहित माह उपाह माह हे 
वे वाह गलावान केवल प्रेम नही अवगाहन 
जीर की बांह न हावत हांह वही जीव ती के उड़ात लेन 
प्यारी के उपर बांह करे पिय पीहे फिरे पर बांह मे हे 

दर्शन 

एक कौस्तो एक से काँजुनि कोक फिय नेह भावि एक यू 
नेक कु छ न दिलाये ज्ञान ती जोह गहरी के सी विकावे अपनाह रूप दीवी अरुप 
के निखो रूप धरी को
शैले एकत्र हैं यूक्त भुरे कुरूत संसुध्द रहे न विसुध्द होत थेरी को हाय हाय शुंदार सकल साथ साथ होले, बारसी को नैरम्मल निदारणो धियो हरी को । २४६

अठ

संभु की सुनाई काहू बाह कु भुझाग बाग बाध्यों बनुराग हुंटे बुझाग भुझाग तो पृथ्वी उलवनी न जेली हूँ बृंकी आदि चितैल बृंके बंधिका सरद सति भावलै पून्यो की जुनाहाई में कुन्हाह की मिली हूँ जानि मुख भयो खुंट कैलों होन पावतो नव्यान रहि जातो ग्रामन पैन कढ़ि जाता र खेल कौन हाल होत हैहूँ मौन जौन आवतो । २५०

ब्रह्म

रक्षन की अतुल्य भूमिपति दूसरी नारिनि हारिनि वागन बौरानि की सम ज्यान ज्यान एक की प्रीति प्रवीति बुझाग आवास सातिभयो छठ के सठ मृन्दिय सोनि हाय पशारन जानि के भार भार निदित अनोत हो उब जानि भारत । २५१

इति नायक कथ नायक श्रद्धा नीं सचि पति मरी चट्ट चेत विद्वृक्ष के नायक श्रद्धा दिल चित चुङ्ङु छोट वहु विलास बहुहास कृम । २५२

चारी को उदाहरण

इति हि की दिल की कहि हूँ दिल की दिल की चित्रकी रब जानी त्यां उत्सर्ज के भागुरु शंका चल्ल चलन चाहुर ताह ताह की जानो हौं रवं चट्ट चेत चाह विद्वृक्ष कौन हैं हृंसी रा ठानाई एक बनुराग शुझाग गुमानि नारिनि मेरी कह्यो किन मानी । २५३
हिंदू नाटक के सच्चे नायक के दूसरी दे

सच्चे

सत्यवती युवतीनि को खूबसूरत परम प्रभाव पुराण पुनः विहाराः

दूसरी देव कुलश्रय को रचि देव विरचि वृषा पदि हारी

जीवनि भूरि सौ जोवन को सुन हुव को गवि अनुवति हारी

नैक जो पीतम को अनुराग सु माह सच्चे को सुहाग विहारी । १५५५

यह सच्चे की मुगाबा सचित्रात जाना

अथ दूसी यथा

शैवी क होउरि देवौ धूरंग मैन टुर्में हिन्दु हागत सून्यो

चारिक हो रारि देव टुर्में सुकौर मयि चिन्नी कौ लून्यो

सांबु सुहाग की मांक उदे करि मौति वरोजनि को मन लून्यो

पावस में उठि की फिकि नैल अन्मास के उठि की फिकि पून्थो। १५५६

हरि की मन्त्याराज कुमार की जैसि सज्ज विवेक देवदत विरचिते प्रकाशा भेद

नायक सच्चे दूसी निंद्र नौ नाम षट्टम विनीदः

अथ हास्य राशास्मि रस वणेन दोहा

चित्त वापित ध्यान विचि होत अञ्जुरित माव

निझु वरसि कत फूल फल न मरसु इरस हुमाव । १५५७

रस सिंगार हास्य अति करणा राय तीर भयानुभु कहिये

वैभवसि अबुलिंग बहु सांत काव्य मति सक्त संस लकी—वे

नाटक मत आठ बिन शाल सम-संदे मावणि हे

निन्द्रे मावणि संहित काव्य नाटक में कवि गृह, नट चेष्टा में विषैः । १५५८
विख्याति

किन चिन नाना रूप रसनि संजारी उक्तके
पूरन रस संजाग चिन्ति रस रग सुंधरके। २५६

रस चंदुर थािं विभाव रस के उपजावन
रस बन्मा अनुभाव सातितिको रस फल्कावन। २६०

ए छौँँ नाजानिकन में रत्याविक्र रस भाग तत
उपजावल बृंगाराधि रस बिमि गावल नाचत सूक्ष्वनिन्न। २६१

नव रस स्वाहा भाव

रति हाँसी अथ सोक रिस बधू उदाह भयजान
जुग पस्मायी विस्मय सांत ये नव चिनि भाव वधान। २६२

रति चढ़ि हीय धिंगार रस हाँसी चढ़िके हास
करना धोक चढ़ि राजु रस रिस बड़ि करै प्रकाश। २६३

बड़ि उहारि वीर रस बड़ी म्यानक भीति
धिन बड़ि के वीभत्स बड़ि विस्मय बदुत रीति। २६४

शोएति सु धड़े संत रसु मिलि विभाव अनुभाव
सातितिक संजारानि है भक्तन काली चुमाव। २६५

जिन जिन ते जो रसु बढ़ि प्पार्ट जिन जिनति प्रभाव
tे दैत्य शिह रसु विधी है विभाव-अनुभाव। २६६

इति शृंगाराधि भाव अव हास्य रस कथन दौहा

भाषा मूँजन भेष जिन उलटाही करि मूँज
स्वील सु उत्तम मद्य वर जिवितिहि हास्य को मूँज। २६७
यथा

पह विकल्प के लिए शत्रु के छपर बल्ला विस्फोट बह राह डूबी
कर तैन करी सरुकूर न लज्जा हैं है उठी रहती
विषयां विषयां न चाह भोंघ झीलने शराह डूबी
कवि के कवि कवि कवि शैले पर पाठक वर्धि कह लहराय डूबी। २६७

अथ कर्तव्यास

विनृढ हुड़ बनीह बुनि मन र मूल पान गह
सिद्ध जानहूँ ते हूँ विषम कर्तव्य कर्तव्य किशान सागर। २६८

जूफ़ियां पुल्यौ रन रथन वीर रु हुँफ़ियां पुल्यौ पर छो गवरी को
बानु की ब insanity रहुनाथ को भानु वर्ष्या हसराग घरी का
लंक सुरि भरु उले लंकते गाह संक रू हुँड घरी का
सीतां भु हुव ने हुप फ्यान छोड़े झिल्लीया मुच मुट वरी का। २७०

अथ राजा र सन

विद्ध ब्रजामु वर्पार करी उपजावल विष्णु क्रोध
होत काम बढ़ि राजा रस जाह प्रताव विरोध। २७१

संपु वराशन दूरदे लुक नीच विषं नीची
मनो हुच है निपटायो
कृषि राम को नाम हुनलैंग विरोध के
क्रोध निपट वचायो
मारगो भुपन को पन की बुनि मारगो
रोकन मारगो बायो
कोने हरी फान की मनि बनाये
कोने याता नीवत सिंह जानायो। २७२
राज भावनत रूप बनत बढ़ते धुःख भोग कर झुनू झटावो हलकारहीं।
कौं बिर बार पाना भी दीन वाजु बिर बिर शीघ्र बिर है सवार ही।
बागरे की पीरत प्रवाह हो बुझारी पति दूर कौन उपहार है कि डूबी उपहार ही।
क्षेत्र दूर:में बाहर निराधार का सूखे तर घार हीन सूखे सर घार ही। 273

हार रौढ़ - कव चीर रस

चीर रस

रन नैरी सन्तुष्टकृति भिन्नक आए दार

युद्ध दुया अचं दाननिष्ठ कौतुहल उद्धार । 274

राजधानी मण्डल कृष्ण बिर देवता अविच सारणदेव वन्दन अवलम्ब

साधन का सन्तुष्ट अवश्यन का बाध्य समाधु कतत धुःख अतिपति समुद्र है।
वारन बागर उजागर धुःख ददा बागर गहर रस नागर मन्तु है।
चैत्राङ्गोद्वीर बलीर की कृपार पर चीर प्रहारत नर चीर मण्डल है । 275

चैत्र मयानक राज

महाराज गौते क्षेत्रतिथि स्रींकृत सब भूमिस सुधा दींकृत चि विवेक है।
हीस संगत दिपिति है गुरुसाह है इस जान इसी सत्य विद्वेष अविषेक है।
सिंह लौ गरम गरार गजं पुन्ज सिंह लौ विवार उर अगुज बनेक है।
सामुही महाराज सुभंते महाराज मैं बुरे सरदारन हवारन में रक है। 276

कव मयानक रस

वर्तु भयानक भेष धूरि करिक अपराध करीति।
मल्ल सब्रू महाराज ग्रह शुभरी उपजति भीति। 277

भीति चैत्र भयानक धूर का वैशाष अंग
चकित चित चिता चक्षु विवारता चुर मंग। 278

कव

कव रिपु भूमन की तुंगरी कल्य गुन भूमन सरार्य गुन हृप मूल नूंदी।
राज राजरंजन ने कवी वेंकन कल्य हुर के अन हराशे हिथ गुंदी।
रात भ्रमण के नगरिते सुनिते है नगरिते सुनिते कड़ी गड़ी गड़ बूढ़ी
बौटक नगरिते कौट के पंगारन ते गौट के नवी के बाहरिने ते बुड़ी। २८४

अव कीमति

वर्षु धिनानी देशि के उपे धिन धिन मारीह
धिन बाये कीमति रख विलि की मूर्ति बारीह। २८५

जान निकार खाब के सीस परि जब बार की थार शतरंभशु
टूटि परे सहिरा सूट रूड़क सौ बूढ़ि परे शिति मंड भट अट
भूम विनान विनान विकायन नाचि दे वरताल फटपट
रीचारबी बीजु परि चूप चाटन नाय क्वाय है खाट फटचाट। २८६

अवृतु रथ

बाह बार के बामे झुने विस्मय वाहिनि विलि
अतृतु रथ विस्मय बाङे घूम सचिति निगिल। २८७

वैभु दीप की बागि बालारी विपति ती सुपति चूड़ गड़ि बायसीह वहि है
वारी कारी वेषिक निकारी केश कीरि बाई बाद बांधी सवा दाहिनी कहि है
थार के बारार उर लांगर बुंधरण बरिनिर बरिनिर राष्टरिन उघारन कहि है
बैरिय विचारितु की भ्रानन की ध्यानी सुरू न - - - - - चांटी - - - - - - रहि है। २८८

श्रीभाष्य महाभाष्य भाषाई है भ्रान के बारार में
काेकि फाका काराट लौं लांगे न पाट न वाट उमें
वारी गहीरे न दीरार वारी बहाई क्याँ बारिन के हिर बाङे
घाटिति उतरे वेश वहि वारार वाट एफ़र बाङे । २८९

अम बाल रथ बोझा
सत्त ग्यान समल कर उपजल सार्वज्ञि बुद्धि
शांत सरस सम-बुद्धि बड़ि, परिताय मत्सुंिि। २८५
यथा

करत उपास वन नास भूमि बासन उदास हुईक अवस्था हि संपति करत के ज्यूस उकमा दोलत कुरुग संग कुम. का मूण्डे रंग सर नंते के होंगे हिने गीविव विग्रह परिवर्तन दिग्रहिन हुवे हि इन हंद्रिय दुरंत के जो गुणवत्ता रहो जो चरन भवानि के कि रीण चाही रही जू चरन भवानि के।

शास्त्र आदिक छात रस हि विद्व बारनु लोग
यिति विभाव अनुवाक्य संवारित के गोग ।

पिष्टि स्री राया रमन भाल बुद्धिव व्रजजग
गन रघु गोकुल नाथ जय खिद दुराय नवनंद।

स्री जैशिक पद्मीप वरी पंथवरं नुमार
राज्याल शुल साज शुल विकरो शुल उदार।

नगर हटाए वास जिसि कान्तय रंग प्रमोद
देवदर किव कृत सरस की ज्यूसिक विनोद।

हति स्री मन्नराजाधिराज स्री चाहान्ति सुवर्णसुगम स्री कुल लिख की
भारवराज बंदन जानानंद की जैशिक हुमार सुश संवारो धाराज ज्यसिक
विनोद गृहि किव देवदर पिरिचित हास्या रक्षादिक रक्षापूर्त स्वती करन
सम्प्लन विनोदः। १५। माणी माणी कुल माणी कुलीया माणं चन्द्र धरारे संवत्
15५८ -- लिपित स्मित पुस्तकसुपुष्णं नंदन्युष्टी खे भवाय रगुपत्राय च।